UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Scanned with CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly
Issue IX Vol III , May. To Oct. 2017

UGC Approved
Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	साहित्य और इतिहास भूषण के काव्य के विशेष सन्दर्भ में	संतोष साहेबराव नागरे	1
2	सामाजिक सरोकारिता को निबाहती रागन स्वामी की गज़ल	डॉ. संजय सोपान रणखांबे	3
3	हिंदी गज़लों में आतंकवाद की भयावहता	डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	7
4	विषय : साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा : एक चिंतन	प्रा.डॉ.एम.ए.येल्लूरे	10
5	बौद्ध दर्शन और असंगघोष की कविता	डॉ.संजय जाधव , प्रा.डहाळे मुंनाभाऊ	13
6	प्रतीक नाटक परम्परा और भारतेंदु के नाटक	प्रा. खराडे आर.एम.	18
7	खिलाड़ियों के जीवन में संतुलित आहार और व्यायाम का महत्व	प्रा. अतुल शर्मा	22
8	राष्ट्रीय एकता में शिक्षा का योगदान	डॉ. प्रविण कांबळे	24
9	इक्कीसवी सदी में दलित आन्दोलन	प्रा.डॉ.सौ.मंगला श्री. कठारे	26
10	सर्वेश्वरदयाल सक्सेन कृत 'लड़ाई' नाटक की प्रासंगिकता	प्रा.डॉ.संजय जाधव	28
11	"मराठवाड्यातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : एक सांख्यिकीय विश्लेषण"	डॉ.नंदकिशोर मुळे	34
12	"मराठवाड्यातील भूमिहीन शेतमजूर : एक सांख्यिकीय विश्लेषण"	शिंदे भगवान	38
13	कापूस आदान-प्रदान किंमत विश्लेषण	डॉ. बोत्रर रेणुकादास यशवंत	41
14	'लीळाचरित्र' ग्रंथातून चक्रधर स्वामींनी सांगितलेला उपदेश	डॉ. विजयकुमार शिवदास ढोले	45
15	नागनाथ कोत्तापल्ले यांचे काव्यविश्व	प्रा. डॉ. मारोती माधवराव घुगे	48
16	बहिणाबाईची कविता	प्रा. डॉ. मारोती रामराव कोल्हे	53
17	आदिम काव्यातील घोर महात्मे	प्रा. डॉ. राजेश धनजकर	57
18	'सोनचाफा' व 'कस्तुरीमृग' जीवनाचा शोध घेणारी नाटयकृती	डॉ.संदीप अ.बनसोडे	62

Scanned with CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue IX Vol III , May. To Oct. 2017 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

साहित्य और इतिहास भूषण के काव्य के विशेष सन्दर्भ में

संतोष साहेबराव नागरे
सहा.प्रा.हिन्दी विभाग,
र.भ. अट्टल महाविद्यालय, गेवराई

---------------(1) -------------------- Dept. of Hindi ------------------------------------

साहित्यका उद्देश पाठकों का अनुरंजन करना है जबकि इतिहास विगत का लेखा है. इतिहास में सब कुछ तथ्यात्मक होता है, अत: वह सत्य से अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता. जब कि साहित्य में इतिहास के साथ–साथ कल्पना और सम्भावना का भी उपयोग किया जाता है, इसलिए उसका फलक इतिहास से विस्तृत हो जाता है. भूशण के साहित्य मे काव्य और इतिहास आपस में घुल – मिल गये है. भूषण के काव्य मे अपने युग का इतिहास प्रतिबिम्बित हुआ है. भूषण ने महाराज शिवाजी एवं छत्रसाल इन दो जननायकों के शौर्य एवं पराक्रम की सच्ची प्रशंसा कर जनता मे उत्साह का संचार किया और अपनी ओजस्वी वाणी में राष्ट्रीय भावनाओं को उस समय अभिव्यक्त किया जब उसकी महती आवश्यकता थी. भूषण के काव्य का मूल्य आज भी है क्योंकि उनके जननायकों का मूल्य दिन–ब–दिन बढता जा रहा है. आ. रामचंद्र शुल्क जी ने भूषण के काव्य के संदर्भ में ठीक ही कहा है,– ''भूषण के वीर रस के उद्‌गार सारी जनता के हदय की सम्पति हुए. भूषण की कविता कवि कीर्ति सम्बन्धी एक अविचल सत्य का दृष्टांत है. जिसकी रचना को जनता हदय स्वीकार करेगा, उस कवि की कीर्ति तब तक बनी रहेगी जब तक स्वीकृति बनी रहेगी.''

भूषण के काव्य में अपने युग का समसामयिक परिवेश प्रतिबिम्बित हुआ है. छत्रपती शिवाजी, छत्रसाल बुन्देला, छत्रसाल हाडा, औरंगजेब, साहू एवं अन्य राव–राजाओं से सम्बधित ऐतिहासिक वृत्तों का उल्लेख इनके काव्य में मिलता है. 'शिवराज भूषण' में अफजल वध, शाईस्तखाँ का प्रसंग, सूरत की लूट, शिवाजी और औरंगजेब की भेंट, कैद से पलायन आदि वृत्त प्राप्त होते है. भूषण ने जो ऐतिहासिक चित्र खिंचे है वह स्थल और नाम दोनों ही दृष्टि से सत्य है. भूषण का काव्य राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त करनेवाला काव्य है. जब मध्यकाल अपने गौरवपुर्ण अतीत को, धर्म को भूल रहा था तब भूषण ने ऐस नायकों का गुणगान किया जिनमें आत्मसम्मान और मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी थी. उस युग के जननायक को अपने काव्य का आधार बनाकर भूषण ने राष्ट्रीय चेतना को ही अभिव्यक्ति दी है. डॉ. राजमल बोरा जी ने इस सन्दर्भ में ठीक ही कहा है,– ''भूषण कवि की वीर वाणी ने मध्ययुग की राष्ट्रीय चेतना को प्रतिध्वनित किया है.''

उत्तर मध्यकाल को संस्कृति पतन का काल कहा जा सकता है. भूशण के सामने राष्ट्रीय सम्मान एवं रक्षा का भी प्रश्न था. धार्मिक स्थानों को अपवित्र किया जाना, मंदिर को गिराकर मस्जिद को बनाया जाना, सांस्कृतिक मानदण्डों की समाप्ति आदि के प्रयास उस समय औरंगजेब के कारण हो रहे थे. औरंगजेब द्वारा मुस्लिम सभ्यता और संस्कृति का बलपुर्वक प्रचार – प्रसार किया जाता था. यह देखकर भूषण का मन व्यग्र हो उठा और धर्म विरोधी मुस्लिम साम्राज्य के प्रति वे मुखर उठे. वस्तुत: उनका विरोध मुसलमानों के प्रति नहीं अपितु उस अन्याय एवं अत्याचार के प्रति था जो तत्कालीन शासक कर रहे थे. ऐसे विषम परिवेश मे राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा के लिए शिवाजी महाराज ने अपना सब कुछ दॉव पर लगा दिया. शिवाजी ने मुगलों से टक्कर ली और मुस्लिम अत्याचारों का विरोध हुए हिन्दुओं के धर्म तथा हिन्दुत्व की रक्षा की. अत: उन्हीं को भूषण ने आदर्श मानकर जनता को जगाया,–

''वेद राखे विदित पुरान सार युत राखे

Scanned with CamScanner

राम नाम राख्यौ अति रसना सुधर में,
हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की
कांधे पै जनेउ राख्यौ माला राखी गर में,
राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यौ घर में."

भूषण की कविता में जनमानस का स्वर विद्यमान है. उसमें पूरा भारत राष्ट्र गूँज रहा है, इसलिए भूषण समूचे राष्ट्र के प्रतिनिधि कवि हैं. क्योंकि भूषण ने जिन दो राष्ट्र नायकों को अपने काव्य का मूलाधार बनाया है वे दोनों छत्रपति शिवाजी, एवं छत्रसाल भारत के त्रस्त एवं भयभीत राष्ट्र का पुनर्निर्माण कर रहे थे और दोनों भारतीय जनता की श्रध्दा एवं भक्ति के आधार थे. देश–प्रेम की भावना जागृत कर भूषण ने एक राष्ट्रीय कवि के कर्तव्य एवं दायित्व का पालन किया. यह राष्ट्रीय भाव भूषण के काव्य में वीर रस का आश्रय लेकर बहा. शिवाजी न होते तो देश की क्या दुर्दशा होती इसका चित्रण करते हुए भूषण कहते हैं,–

"पीर पैगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देत
सिध्द की सिधाई गई, रही बात रब की.
कासी हू की कला गई, मथुरा मसीती भई
शिवाजी न होतो तो सुनति होती सब की."

निष्कर्ष :

भूषण की कविता में अपने युग का इतिहास प्रतिबिम्बित हुआ है. भूषण की कविता में वीर रस का अपूर्व प्रवाह है तथा उनकी ओजस्विनी उक्तियों में राष्ट्रीय दर्द प्रतिबिम्बित है. भूषण की कविता में किसी संकीर्ण भावना, साम्प्रदायिकता अथवा चाटुकारिता के लिए कोई स्थान नहीं है. उनमें सर्वत्र राष्ट्रहित और राष्ट्रीय चेतना समाहित है.

----------संदर्भ संकेत----------

१. भूषण और उनका साहित्य– डॉ.राजमल बोरा
२. मंथन– डॉ.ज्योति व्यास
३. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आ.रामचंद्र शुक्ल
४. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ.श्रीनिवास शर्मा
५. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ– डॉ.शिवकुमार शर्मा
६. रीतिकाव्यधारा– सम्पा. डॉ.रामचंद्र तिवारी, डॉ.रामफेर त्रिपाठी
७. रीतिकाव्य संग्रह– प्रो.विजयपाल सिंह

Scanned with CamScanner